गुल-ओ-ख़ार

जिगर जालन्धरी

गुल-ओ-ख़ार
जिगर जालन्धरी

वो रूठ के मन पायेंगे-कुछ कह नहीं सकते,
हम बिगड़ी बना पायेंगे-कुछ कह नहीं सकते।

हम जिनकी तमन्ना में ये दिन काट रहे हैं,
वो दिन भी कभी आयेंगे-कुछ कह नहीं सकते।

आई है इधर मौत-उधर आये हैं वो भी,
जायेंगे कि रह जायेंगे-कुछ कह नहीं सकते।

अफ़साना-ए-दिल सुनने को माइल[1] तो हुए हैं,
क्या सुनके वो फ़रमायेंगे-कुछ कह नहीं सकते।

कुछ कहने को हम उनकी तरफ़ जा तो रहे हैं,
कुछ कह भी उन्हें पायेंगे-कुछ कह नहीं सकते।

दुनिया ने हमें ज़ख़्म बहुत गहरे दिए हैं,
तड़पेंगे कि मर जायेंगे-कुछ कह नहीं सकते।

रोशन तुझे हम रक्खेंगे ऐ शमे महब्बत,
लौ और बढ़ा पायेंगे-कुछ कह नहीं सकते।

मिलने उन्हें जाते हैं हम आखों में लिए अश्क,
यह जाम छलक जायेंगे-कुछ कह नहीं सकते।

जो बहर-ए-महब्बत[2] में 'जिगर' कूद पड़े हैं,
वो पार भी लग जायेंगे-कुछ कह नहीं सकते।

---

1. राज़ी 2. प्यार का सागर।

दुनिया ने मेरे दीदा - ए - पुरनम[1] नहीं देखे,
इसको है गुमां, मैंने कभी ग़म नहीं देखे ।

इन्सान बहुत देखे हैं शैतान से बढ़ कर,
इन्सान फ़रिश्तों से भी कुछ कम नहीं देखे ।

आगे न बढ़ीं मेरी हंसी से तेरी नज़रें,
अफ़सोस, कभी तूने मेरे ग़म नहीं देखे ।

ख़ुशियां भी बहुत देखी हैं ऐ दिल ! तेरे हाथों,
दिन हमने मुसीबत के भी कुछ कम नहीं देखे ।

दिल कहता है - सीधी हैं बहुत राह - ऐ - महब्बत,
क्या इसने तेरे गेसुओं के ख़म नहीं देखे ?

जी भर के ये रोने भी नहीं देते किसी को,
ऐ दीदा - ए - तर[2] ! तूने अभी ग़म नहीं देखे ।

मग़रूर 'जिगर' ! क्यों है ज़माने की वफ़ा पर,
क्या तूने बदलते हुए मौसम नहीं देखे ?

---

1. भीगी आंखें 2. भीगी आंख ।

हर दिल यहां बेताब है - मालूम नहीं क्यों,
हर आंख में सैलाब है - मालूम नहीं क्यो ।

इन्सान में तलख़ी कभी देखी न थी इतनी,
हर बात में ज़हराब[1] है - मालूम नहीं क्यों ।

कल तक तो बड़े चैन से था आस का पंछी,
आज उड़ने को बेताब है - मालूम नहीं क्यों ।

आवाज़ निकलती ही नहीं मुंह से किसी के,
हर हल्क़ में सीमाब[2] है - मालूम नहीं क्यों ?

तूफ़ान तो पहले भी कई देखे हैं दिल में,
अब के बड़ा बेताब है – मालूम नहीं क्यों ।

जो फूल है - कांटे की तरह सूख गया है,
कांटा जो है - शादाब है - मालूम नहीं क्यों ।

जब साक़ी ओ मयख़ाना ओ मयकश हैं सब अपने,
फिर शीशों में ज़हराब है - मालूम नहीं क्यों ।

फूलों की तरह जिसकी महक चारों तरफ़ थी,
शोलों में वो पंजाब है - मालूम नहीं क्यों ।

मरघट में पड़ी लाशों की मानिन्द 'जिगर' ! आज,
हर महफ़िल - ए - अहबाब[3] है - मालूम नहीं क्यों ।

---

1. ज़हर 2. पारा 3. दोस्तों की महफ़िल ।

हो रहा है यह क्या बहारों में ?
फूल बिखरे हैं रह - गुज़ारों में ।

हमसे छुप छुप के चांद तारों में,
बातें करते हैं वो इशारों में ।

मेरा हुस्नें - नज़र भी शामिल है,
आपके दिल - नशीं नज़ारों में ।

ऐसी मौजों से बचना - नामुमकिन,
छुप के रहती हैं जो किनारों में ।

तेरे जलवों को देख लेता हूँ,
फूल कलियों में, चाँद तारों में ।

यह शरफ़[1] फूल ही को हासिल है,
वरना हंसता है कौन ख़ारों में ?

पर्दा करना तो सीख ले ऐ दोस्त !
छुपता है, वो भी चाँद तारों में ।

दिल - ए - रंगीं मिज़ाज के सदक़े,
उमर गुज़री मेरी बहारों में ।

कल जो शामिल थे क़ातिलों में 'जिगर' !
आज बैठे हैं सोगवारों में ।

---

1. वरदान

तड़पा न दे जो दिल को, वो आवाज़ कुछ नहीं,
वो साज़ जिस में सोज़ न हो, साज़ कुछ नहीं ।

वो हुस्न क्या है, जिसको नहीं पास इश्क़ का ?
जो दूर हो नियाज़[1] से, वो नाज़ कुछ नहीं !

कब मन का रोग जाता है तन के इलाज से,
ये मेरे चारागर, मेरे दम - साज़[2] कुछ नहीं ।

भर दे जो दिल के ज़ख़्म, वो आवाज़ खूब है,
कर दे जो दिल में ज़ख़्म, वो आवाज़ कुछ नहीं ।

गुस्से के साथ हम से वो करते हैं गुफ़्तगू,
बातें हैं दिल - नशीं, मगर अंदाज़ कुछ नहीं ।

शाहों के मक़बरों पे ज़रा ग़ौर से नज़र,
यह मर्तबा, यह शान, यह एज़ाज़[3] कुछ नहीं ।

ऐ शम - ए - ज़िन्दगी ! तुझे देखा है ग़ौर से,
अन्जाम कुछ नहीं, तेरा आग़ाज़ कुछ नहीं !

ग़म में न दिल - शिकस्ता[4] हुए हम ये सोचकर,
मिज़राब[5] से शिकस्ता हो जो साज़, कुछ नहीं !

दाद - ए - ख़लूस[6] मांग न दुनिया से - ऐ 'जिगर' !
इसकी नज़र में दावत - ए - शीराज़[7] कुछ नहीं !

---

1. नम्रता 2. दोस्त 3. सम्मान 4. दिल हारना
5. सितार बजाने वाला यंत्र 6. प्यार की प्रशंसा 7. महब्बत

शायद उनको हमारी याद आई,
दिल में बजने लगी है शहनाई।

दोनों हाथों से लूटती है हमें,
कितनी ज़ालिम है तेरी अंगड़ाई।

अब ख़्यालों ने घेर रक्खा है,
रास आई न हमको तनहाई।

वो भी जलवा दिखाईए, जिससे,
ख़ुद तमाशा बने तमाशाई।

नूर ही नूर है निगाहों में,
दिल में किस की है जलवा फ़रमाई[1] ?

मौत भी बेन्याज़[2] रहती है,
ज़िन्दगी भी न हमको रास आई।

वो हमें ख़ाक - ए - पा[3] समझते हैं,
ये हमारी है इज़्ज़त अफ़ज़ाई।

हँस के दार - ओ - रसन[4] को चूमते हैं।
हम ख़लूस - ओ - वफ़ा[5] के सौदाई।

'जिगर' ! इन पत्थरों की दुनिया में,
ख़ाक होगी तेरी ये शनवाई।

---

1. नज़ारा 2. रूठी 3. पैरों की धूल 4. फांसी का फंदा
5. प्रेम दिवाने।

मैं फ़ना[1] हो के भी फ़ना न हुआ,
बुलबुला पानी से जुदा न हुआ।

दिल से मिलना तो उसको आता नहीं,
वो हमारा हुआ, हुआ, न हुआ।

उम्र तेरी तलाश में गुज़री,
मैं कभी ख़ुद से आशना[2] न हुआ।

हमसे नफ़रत है, या महब्बत है,
तुम से तो यह भी फैसला न हुआ।

किस बहाने से जान लेता है,
वो बुरा करके भी बुरा न हुआ।

नाम तक लोग भूल जाते है,
इक फ़साना हुआ, ख़ुदा न हुआ।

हम कहां उनको देख सकते थे?
ख़ैर गुज़री जो सामना न हुआ।

तीर - अंदाज़ ऐसी मौत ही है,
तीर जिसका कभी ख़ता[3] न हुआ।

आप क्या पूछते हैं हाले 'जिगर'?
मुस्कराये उसे ज़माना हुआ।

---

1. मिटना 2. परिचित 3. चूकना

आदमी

फूल कितना भी ख़ूबसूरत हो,
उसमें नकहत[1] नहीं तो कुछ भी नहीं।
लाख जौहर[2] हों आदमी में अगर,
आदमियत नहीं तो कुछ भी नहीं।

ज़िन्दगी

जो हो बेज़ार[3] जीने से, उसको,
रंज क्या चीज़ है? ख़ुशी क्या है?
दिन गुज़रते हों जिसके गिन गिन कर,
पूछिए उससे, ज़िन्दगी क्या है?

दिल का किरदार

सर खपाते हैं यूहीं आप, 'जिगर'!
कौन इस दिल को समझ पाता है?
जान देता है कभी फूलों पर,
कभी कांटों पे यह मर जाता है।

---

1. ख़ुशबू 2. ख़ूबियां 3. तंग

पेड़ और इनसान

यह तो क़ुदरत का है असूल कि पेड़,
सर झुकाता है, जब फल आता है,
मगर इन्सां की है अजब फ़ितरत,
दौलत आती है, सर उठाता है।

दिल की ज़बां

नाज़, अन्दाज़, रंग, ढंग, अदा,
हम सब ऐ जान-ए-जां समझते हैं,
नहीं बेदिल[1] तेरी ख़मोशी से,
तेरे दिल की ज़बां समझते हैं।

दाग़ - ओ - ज़ख़्म

है बदन पर लिबास दाग़ों का,
जान ज़ख़्मों से छलनी छलनी है,
ज़िन्दगी की डरावनी सूरत,
किसको मालूम, कब बदलनी है ?

---

1. मायूस

बुरा वक़्त

उनकी इज़्ज़त गई, विक़ार[1] गया,
उनकी राहत गई, क़रार[2] ग़या।
ऐ 'जिगर' ! वक़्त के विगड़ने से,
अच्छे अच्छों का एतबार गया।

अच्छा वक़्त

साहिब - ए - इक़्तदार[3] होता है,
साहिब - ए इख़्तयार[4] होता है,
जान होता है महफ़िलों की बशर,
वक़्त जब साज़गार[5] होता है।

दौलत

यह तो मुमकिन है कि दौलत के सबव,
तुझको हर नेमत - ए - कौनैन[6] मिले,
मगर ऐ दोस्त ! ज़रूरी तो नहीं,
दिल को तसकीन मिले, चैन मिले।

---

1 शान 2. चैन 3. इज्ज़तदार 4. हाकिम 5. मद्दगार
6. दोनों जहां की नेमतें

बदलते मौसम

महब्बत से, वफ़ा से, दोस्ती से,
जुदा अहबाब[1] होते जा रहे हैं,
तअल्लुक़ था किसी से जब किसी को,
वो मौसम ख़्वाब होते जा रहे हैं।

नाम-काम

नाम इक पहचान है इन्सान की,
नाम से छोटा बड़ा कोई नहीं,
ऐ 'जिगर' ! यह सोचने की बात है,
काम से छोटा बड़ा कोई नहीं।

जवानी की कहानी

कितने ही शौक़ से लिक्खी थी-मगर,
कौन पढ़ता है कहानी मेरी ?
काले हर्फ़ों के मज़ारों में 'जिगर !
हो गई दफ़न जवानी मेरी ।

---

1. दोस्त

बद-नसीबी

वो बहुत बदनसीब होते हैं,
ख़ुद ही अपने रक़ीब होते हैं,
जिनका दुनिया में कोई दोस्त नहीं,
सबसे बढ़ कर ग़रीब होते हैं ।

इलाज-ए-दर्द-ए-दिल

न किसी की दवा से जायेगा,
न किसी की दुआ से जायेगा,
न मेरी इलतजा से जायेगा,
दर्द दिल का क़ज़ा[1] से जायेगा ।

कमाल-ए-हुस्न

सौ बहारें हैं इक तबस्सुम[2] में !
सौ तराने हैं इक तकल्लुम[3] में !
रक़्स[4] में कायेनात[5] आ जाये !
वो असर है तेरे तरन्नुम[6] में !

---

1. मौत 2. मुस्कान 3. बात 4. नाच 5. दुनिया
6. गुनगुनाना

एक मंज़र

हल्की हल्की हवा की लहरों से,
यूं कली लहलहाये जाती है,
जैसे सुन कर पीया की बातें दुल्हन,
ज़ेर - ए - लब मुस्कराये जाती है।

हादिसों की नगरी

घर से बाहर न जायें कब तक लोग ?
बैठे आंसू बहायें कब तक लोग ?
ऐ 'जिगर' ! हादिसों की नगरी में,
ख़ैर अपनी मनायें कब तक लोग ?

इहसास - ए - ख़ुदी[1]

इक मेहरबां की चश्म-ए-इनायत के फ़ैज़[2] से,
होने को मेरा काम सर-अंजाम[3] हो गया,
ख़ुद्दारीयों ने ज़ख़्म लगाये कुछ इस क़दर,
मैं कामयाब हो के भी नाकाम हो गया।

---

1. आत्म सम्मान का इहसास 2. बदौलत 3. सम्पन्न